National

त्रैमासिक साहित्यिक पत्रिका
ISSN-2321-1504 Naagfani

वर्ष 10 अंक संयुक्तांक 21-32 दिसम्बर 2019-मार्च 2020
सहयोग राशि 45 रू.

नागफनी

अस्मिता, चेतना और स्वाभिमान जगाने वाला कथा साहित्य

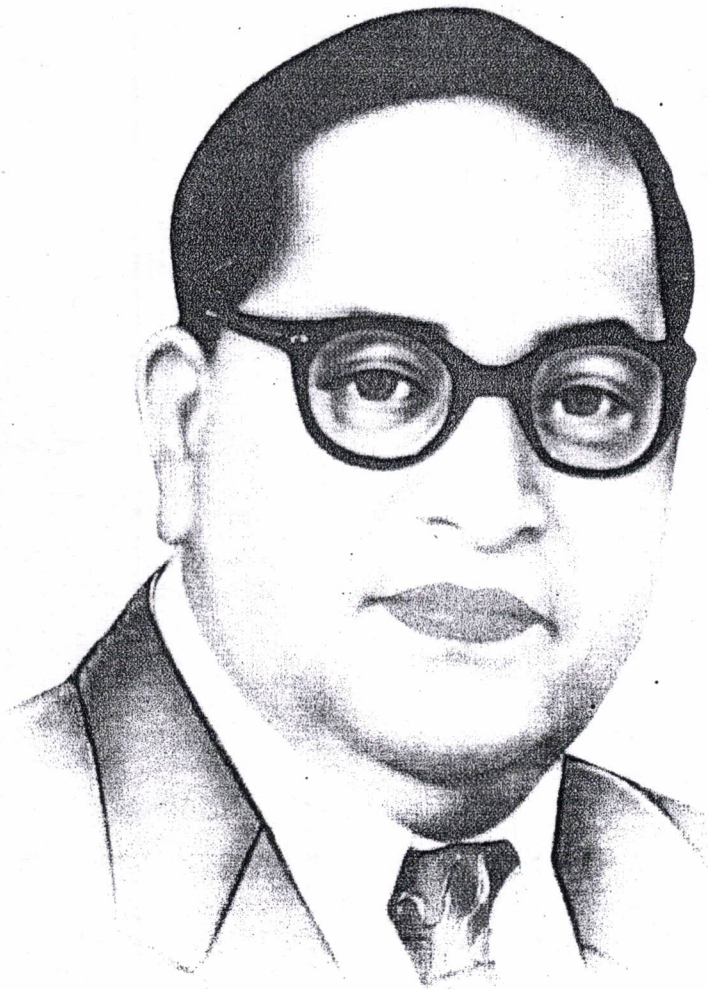

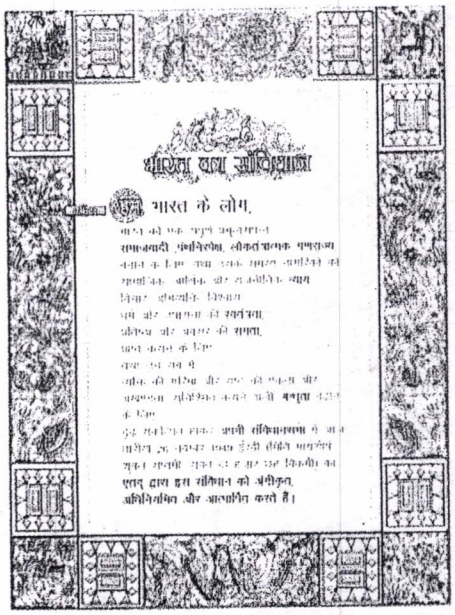

प्रथम शिक्षिका
सावित्रीवाई फुले

जननायक

डॉ. बी.आर. अम्बेडकर

नागफनी

(अस्मिता, चेतना और स्वाभिमान जगाने वाला कथा साहित्य)

त्रैमासिक साहित्यिक पत्रिका
* वर्ष 10 * अंक सयुक्तांक 21--32 * दिसम्बर 2019--मार्च 2020

त्रैमासिक साहित्यिक पत्रिका ISSN- 2321-1504 Naagfani RNI No. UTTHIN/2010/34408

*Postal Reg. No. UA/DO/DDN/572/2010-2012

संपादक''
पना सोनकर

ार्यकारी संपादक''
एन.पी.प्रजापति
बलिराम धापसे

–संपादक
अखिलेन्द्र प्रताप सिंह
दिलीप मेंहरा, गुजरात

ाह कार मंडल
विष्णु सरवदे, प्रोफेसर,केन्द्रीय विश्वविद्यालय हैदराबाद तेलांगना
किशोरी लाल रैगर, प्रोफेसर, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय जोधपुर, राजस्थान
एन.एस.परमार,महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय बड़ौदा, गुजरात
दिनेश कुशवाह, रीवां
ओम राज
एम.डी.इंगोले, महाराष्ट्र
संजय एल मादार धारवाड़, मद्रास
पी.व्ही.महालिंगे माटुंगा मुंबई
सुधीर सागर

निधि मंडल
सिंह (उत्तराखण्ड) डॉ. भूरेलाल (उत्तर प्रदेश) हीरा लाल राजस्थानी (दिल्ली) संजीव खुदशाह गढ) सुरेश मूले (कर्नाटक) प्रो0 आर.एच. वणकर (गुजरात) प्रो. एस.एस.सावंत (सांगली) प्रो. अली (बंगलौर) डॉ. सुनीता साकरे (मुंबई) अरूणा लोखण्डे (महाराष्ट्र) कमर मेवाड़ी स्थान) डॉ. उत्तम राजाराम (कोल्हापुर) रामयतन यादव (बिहार) दीनानाथ साहनी रामश्रेष्ठ (पटना)।

पृष्ठ कलाकृति--असलम, अब्दुल कलाम अंसारी (गुन्ना)

ाईन एवं ले आउट--अजय नेगी

प्रकाशक, मुद्रक व संपादक सपना सोनकर द्वारा भास्कर प्रेस 13–कोर्ट रोड देहरादून–248001 खण्ड, फोन:09412054426से मुद्रित व दून कांटेज स्प्रिंग रोड, मंसूरी –248179, उत्तराखण्ड से शित।

पादकीय / व्यवस्थापकीय कार्यालय

दून व्यू कांटेज स्प्रिंग रोड, मंसूरी –248179, उत्तराखण्ड दूरभाष–0135–6457809 मों0 10778718एवं

डब्ल्यू डी आर--62 ए. ब्लाक कालोनी बैढन, जिला--सिंगरौली म.प्र.486886, मों 09752998467

योग राशि–45/–रूपये वार्षिक सदस्यता–शुल्क–170/–रूपये संस्था और पुस्तकालयों के – 160/–रूपये विदेशों में–50/–डालर

पत्रिका की किसी भी सामग्री का उपयोग करने के पहले संपादक की अनुमति लेना यक है।संपादन संचालन पूर्णतयःअवैतनिक एवं अव्यवसायिक है।'नागफनी' में प्रकाशित शोध त्र एवं लेख, लेखकों के विचार उनके स्वंय के हैं, जिनमें संपादक की सहमति अनिवार्य नही। फनी' से संबंधित सभी विवादास्पद मामले केवल देहरादून न्यायालय के अधीन होंगे।अंक में शित सामग्री के पुर्नप्रकाशन के लिए लिखित अनुमति अनिवार्य है। सारं भुगतान मनी आर्डर/चैक/बैंक फर/ई–पेमेन्ट आदि से किये जा सकते हैं। देहरा दून से बाहर के चैक में बैंक कमीशन 25/– रिक्त जोड़ दें।

अनुक्रम

पृष्ठ सं.

संपादकीय
डॉ0एन.पी.प्रजापति
बैठे ठाले का धंधा चालू है — 1--4

शोधपत्र - दलित विमर्श — 5--8
हिन्दी दलित साहित्य : वैचारिक चेतना के आधार : बाबू लाल सिंह अयाग
दलित साहित्यः संघर्ष के आयाम : डॉ0 एन0पी0 प्रजापति — 9--19
लोक तांत्रिक आधार पर खड़ा दलित साहित्य : डॉ. कृष्ण विहारी, विद्या — 20--23
असमानता में अस्मिता की तलाश : प्रो0 संजय एल. मादार — 24--27
आधुनिक कालीन हिंदी दलित साहित्य का इतिहास :विद्या अहिरवार, कृष्ण विहारी राय — 28--33
'दलित जीवन का यथार्थ चित्रण' प्रोफेसर बेवले ए.जे. — 34--37
''अम्बेडकरवादी साहित्य में वास्तववाद का भविष्यवोध : डॉ. अलका एन. गडकरी — 38--41
हिंदी कहानी में दलित विद्रोह --प्रो.डॉ.एम.डी.इंगोले — 42--44

शोधपत्र - आदिवासी विमर्श
मध्यप्रदेश की बारेला आदिवासी उपजाति में प्रचलित पहेलिया एवं लोकोक्तियों का अध्ययन डॉ.राजाराम आर्य — 45--47

कविता
अच्छे दिनों का डर : डॉ0 दिनेश कुशवाह — 48
कविताएँ : कृष्णा विश्वकर्मा — 49--50

शोधपत्र
21वी सदी के उपन्यासो में किन्नर विमर्श : श्री.आगलगुरे सूर्यकांत विश्वनाथ — 51--53
सामाजिक चेतना के प्रबुद्ध सरोकार कवि बाबा नागार्जुन : डॉ. महेमूद पटेल — 54--57
शिवमूर्ति के साहित्य में समाज का यथार्थ : निवेदिता लखेरा — 58--60
''मालवा के खींची चौहानों की उत्पत्ति एक अध्ययन'' : श्री ओमप्रकाश गेहलोत — 61--63
भारतीय शिक्षा के प्रणेता : स्वामी दयानंद सरस्वती : डॉ. दिग्विजय कुमार शर्मा — 64--69
भारतीय दार्शनिक, आर्थिक एवं साहित्यिक चिंतन परंपरा में कृषि जीवन : डॉ. गोविंद बुरसे — 70--74
नादिरा जहीर बब्बर कृत 'आपरेशन क्लाउडबर्स्ट' की रंगमंचीयता : बलिराम धापसे — 75

शोधपत्र--स्त्री विमर्श
21 वी सदी के महिला उपन्यासों में नारी चेतना : श्री. आगलगुरे सूर्यकांत विश्वनाथ — 76--78

लोक साहित्य
हरियाणवी में अस्मिता की तलाश : श्रवण कुमार यादव — 79

तेलगू दलित साहित्य
तेलगु दलित कहानी में आत्मसम्मान का संघर्ष : पी.व्ही. महालिंगे — 80--82

समीक्षा
''दलित सन्दर्भ और गटर का आदमी'' : डॉ. दिलीप मेहरा — 83--84

कहानी
दूध का दाम : रूपनारायण सोनकर — 85--86

ISSN-2321-1504 Naagfani

हिंदी कहानी में दलित विद्रोह

–प्रो.डॉ.एम.डी.इंगोले

'सलाम' यह ओमप्रकाश वाल्मीकि की प्रसिध्द एवं विशिष्ट कहानी हैं। प्रस्तुत कहानी भारतीय स्वतंत्रता के बाद दलित, सवर्णों की नई पीढी में आये परिवर्तन को अभिव्यक्त करती हैं। साथ ही पुरानी पीढी के बुजुर्गों की रूढिवादी मानसिकता को व्यक्त करती है। यह कहानी ग्रामीण परिवेश में दलित–सवर्णों के संबंधों को रूपायित करती हैं। 'सलाम' कहानी ग्राम–जीवन की जाति प्रधान वर्ण व्यवस्था को चित्रित करती है।

गॉव के एक दलित जुम्मन चुहडे की दसवीं पास लडकी से एक दलित 'हरीश' नामक लडके की शादी होती है। गॉव के सवर्णों का दलित लडकियों के बारे में यह मानना है कि, लडकी को पढाना 'नाक कटाने' जैसा हैं। दुल्हन की मॉ गॉव के ऊँचे लोगों के घर में काम करती है। परंपरा से चले आ रहे नियम के अनुसार निम्न जाति के दुल्हा–दुल्हन को ऊँचे सवर्ण जाति के रांघडों के घर 'सलाम' करने के लिए जाना पडता है। किन्तु पढा–लिखा दलित युवक 'हरीश' इस परंपरा को नकारता है। उनके पिताजी भी उन्हें 'सलाम' करने के लिए जाने से मना कर देते हैं। रांघड परिवारों से बार–बार बुलावा आने पर भी और जात–बिरादरी के बडे–बुजुर्गों द्वारा समझाये जाने पर भी 'हरीश' 'सलाम' करने के लिए जाने से मना कर देता हैं। उसे सवर्णों के आगे झुकना कतई मंजूर नहीं है। वह मानता है; 'पानी में रहकर मगर से बैर नहीं किया जाता' पर यह कहावत अब पुरानी हो चुकी हैं।

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था ने 'हरीश' जैसे दलित युवकों तथा 'कमल उपाध्याय' जैसे उच्च वर्णीय युवकों में ऊँच–नीच और छुआ–छूत को लेकर काफी परिवर्तन आया हैं। जो परंपराएँ या रूढियॉ मनुष्य के मनुष्यत्व को नकारती है; ऐसी परंपराओं में, 'गॉव की गंदगी साफ करना, मरे हुए जनावरों को गॉव से बाहर फेंकना, गॉव के चौपाल से गुजरते समय जूतों या चप्पलों को हाथों में लेकर या सिर पर रखकर चलना' आदि जैसी दलितों की परंपराओं में से एक 'सलाम' की परंपरा को 'हरीश' नकारता हैं। इसी संदर्भ में 'हरीश' की दुल्हन के पिता जुम्मन से कही हुई बात दृष्टव्य है–

"आप चाहे जो समझें मैं इस रिवाज को आत्मविश्वास तोड़ने की साजिश मानता हूँ। यह 'सलाम' की रस्म बंद होनी चाहिए।"[1]

अर्थात् 'सलाम' जैसी प्रथाओं के प्रति पढे–लिखे दलित युवकों का विद्रोह मुखरित होता हुआ दिखाई देता हैं। ऐसी प्रथाएँ सवर्णो द्वारा दलितों पर लादी हुई हैं, जो दलितों के मान–सम्मान एवं स्वाभिमान को आहत करती हैं।

'जहरीली जडे' यह रूपनारायण सोनकर की एक महत्वपूर्ण कहानी है। इस कहानी के माध्यम से रूपनारायण सोनकर ने यह दर्शाने की कोशिश की है कि, किस तरह भारतीय समाज में निम्न जातियां दलितों के प्रति हिंदुओं के मन में अस्पृष्यता एवं छुआ–छूत की भावना कितनी गहराई से जडे गडी हुई हैं। इस तथाकथित वर्चस्ववादी हिंदुओं के विरूध्द रूपनारायण सोनकर ने प्रस्तुत कहानी के नायक 'हीरालाल' तथा उनके पिता के द्वारा विद्रोह को प्रस्तुत किया है।

हीरालाल के पिता राजगीर एवं बांध काम के ठेकेदार थे। वे बडे ही सीधे,साफ दिल तथा नेक इंसान थे। हीरालाल जब पॉचवी में पढता था तब उसके गांव के ग्राम प्रधान राजसिंह ने उसके दादा को प्राइमरी पाठशाला बनाने का ठेका बहुत सस्ते में दिया था। दादा के सरल स्वभाव का फायदा सजातीय लोग ही नहीं अन्य लोग भी उठाते थे। दादा के स्वभाव संबंधी हीरालाल की भाभी उसके मॉ से कहती है;

"समाज में ऐसे लोग होते हैं जो दूसरों के कंधो पर बंदूक रखकर चलाते हैं। दूसरों का नुकसान कर अपने लिए जीते हैं। अपने स्वार्थ के लिए दूसरों के नुकसान का उनके लिए कोई गम या पश्चाताप नहीं होता हैं। ऐसे ही लोगों को पैरासाईट कहा जाता हैं।"[2]

स्कूल के हेडमास्टर तथा अध्यापकों द्वारा दलित–छात्रों का स्कूल में शोषण किया जाता हैं। जब स्कूल की छत डलवाई जाती है तब हीरालाल को मजदूर की तरह काम पर लगाया जाता हैं। अन्य सवर्ण हिंदू छात्रों की तुलना में उससे कुछ अधिक ही श्रम करवाया जाता है। उसके पैर में मोच आने पर वह जब थोडा–सा बैठ जाता है तब हेडमास्टर त्रिवेणी शंकर चौबे उसके दर्द को देखे बिना हीरालाल को लताड़ते हुए कहता है;

"साला बहाना कर रहा है। अपने बाप को साला रो–रो कर सुना रहा है। साले नीच कहीं के। एक दिन काम करने में गांड फट गई। साले सरकार तुझे पढाने की कोई फीस नहीं लेती है। वजीफा मुफ्त में देती है। हराम जादे कुछ तो लिहाज कर। भोसड़ीवाला बहाना बना रहा है। बहिन–चोद, अभी साले तेरी गांड मे चार लात मारता हूँ तब तेरी मोच ठीक हो जाएगी।"[3] (प .14)

हीरालाल के जख्मी जांध पर हेडमास्टर त्रिवेणी शंकर चौबे कई लात मारता है। यहॉ यह बात स्पष्ट होती है कि, दलित छात्रों के प्रति स्कूल में हेडमास्टर क्या और मास्टर क्या सबका रवैया अन्यायकारक होता हैं। हीरालाल के पिता अपने बेटे के प्रति हो रहे इस अन्याय को देखकर छत पर से जल्दी–जल्दी उतरकर पहले अपने बेटे से लिपटता है, चूमता है। फिर हाथ में कन्नी लेकर हेडमास्टर त्रिवेणी शंकर चौबे को पीटते हुए कहता है–

"निर्दयी मास्टर। हरामी की औलाद। बच्चे को मारता है। मेरा लडका इतना अधिक काम कर रहा है और ब्राम्हण–ठाकुर के लडके कोई काम नहीं कर रहे हैं। बरगद की छाया के नीचे आराम कर रहे हैं। इतना बडा जुर्म मेरे सामने हरामी चौबे कर रहा है। इस कुत्ते को जान से मार डालूंगा। मेरे पीछे भी मेरे बच्चे के साथ यह अत्याचार करता होगा।"[4] (प .14)

इस तरह एक दलित पिता का अपने बेटे पर हो रहे अन्याय के प्रति सवर्ण हिंदू मानसिकता वाले हेडमास्टर के प्रति खुला विद्रोह हैं। बेटे पर हुए अन्याय का बदला हेडमास्टर को पीटकर लेने से ही वह वहीं नहीं रूकता बल्कि उसकी शिकायत ग्राम प्रधान राजसिंह से करता हैं। त्रिवेणी शंकर चौबे पर दलित बच्चों के साथ भेदभाव बरतने का आरोप लगाता है। फिर चौबे हीरालाल के पिता के पास आकर गिड़गिड़ाने लगते हैं, हाथ पैर जोडते हैं, अपने बच्चों की दुहाई मॉगते हैं। इस तरह का व्यवहार फिर कभी किसी भी दलित बच्चों के साथ न करने की कसमें खाता है। वह कहता है;

"मैं एक गुरू के आदर्श को भूल गया था। गुरू का कार्य समाज से सभी प्रकार का अंधकार मिटाना होता है। गुरू द्वारा किया गया विद्या रूपी ज्ञान प्रकाश के समान होता है, जो चारों तरफ उजाला करता हैं। सभी को प्रकाशित करता है। जैसे प्रकाश बिना भेदभाव को मिटाता है उसी तरह मेरा अच्छा व्यवहार और मेरी शिक्षा सभी बच्चों के साथ समान होगी"[5] (प.15)

त्रिवेणी शंकर चौबे को अपनी भूल के एहसास के साथ आत्मबोध भी हो जाता हैं। यह कहानी का महत्वपूर्ण सूत्र है कि, सवर्ण हिंदुओं द्वारा दलितों पर ढाये जाने वाले अत्याचार का बोध उन्हें होता हैं।

जिस प्रकार हीरालाल के पिता का हिंदुत्ववादी मानसिकता वाले त्रिवेणी शंकर चौबे के प्रति विद्रोह कहानी में चित्रित हुआ है, ठीक उसी तरह हीरालाल भी इस व्यवस्था के प्रति विद्रोहात्मक रूख अपनाता हैं। इस संबंध में कहानी में एक प्रसंग चित्रित है। हीरालाल गॉव के सरपंच रामभजन अवस्थी के कहने पर बंडी मुस्तैदी,दिलेरी और साहस से अपनी जान जोखिम में डालकर शिव मंदिर के गुंबद की कलाई करता हैं। शिव मंदिर में अखंड रामचरितमानस का पाठ शुरू होता है। एक दिन हीरालाल अपने सहपाठियों के कहने पर ब्राम्हण लडके–लडकियों के साथ बैठकर रामचरित मानस का अखंड पाठ पढने लगता हैं। उतने में रामभजन अवस्थी वहॉ पहुँचते हैं। हीरालाल को अखंड पाठ पढते देखकर आग बबूला होकर कहते हैं–

"इस अछूत को रामायण की चौपाई पढने का कोई अधिकार नहीं है। यह अखंड पाठ खंडित हो जाएगा। हीरालाल को डॉटते हुए कहते हैं–चल हट यहॉ से"[6] (प .19)

तब हीरालाल अपमान का घूंट पीकर रामचरित मानस का ग्रंथ रामभजन अवस्थी के मुँह पर फेंक कर मार देता है। हीरालाल का यह कृत्य भारतीय जातिवादी व्यवस्था के मुँह पर जोरदार चांटा मारने जैसा है। यह उसका उस व्यवस्था के प्रति खुला विद्रोह है, जो धार्मिक पूजा पाठ का अधिकार केवल सवर्ण ब्राम्हण--ठाकुरों को ही देती हैं।

कहानीकार ने हीरालाल के परिवार की गरीबी का भी बडा मार्मिक चित्रण प्रस्तुत कहानी में किया है। हीरालाल के पिता जब मजदूरी की तलाश में उत्तर प्रदेश छोडकर मध्य प्रदेश में जाते हैं तब घर की हालात बहुत खस्ता होती है। दो रोटी के बदले उसकी मॉ जंगल से घास लाकर एक ब्राम्हण परिवार को देती है। जिस दिन घास नहीं मिली उस दिन उनको भूखा ही सोना पडता है। खेतों से फसल कटने पर दाने बीनकर लाना, महुए के फूलों को चुनकर लाना और अपनी गुजारा करना। महाराष्ट्र में भी इस प्रकार की बातें दलितों में आम थी। अक्सर हमने देखा है कि, महाराष्ट्र में दलित लोग फसल या खलिहानों के दिनों में पशुओं के खाये हुए अनाज के दाने जब उनके गोबर में गिरते है, तो उसे पानी से धोकर, सुखाकर उसे पीसकर अपनी भूख मिटाते थे। इस तरह कहानी का हीरालाल ही नहीं अपितु इस देश का हर दलित बच्चा बचपन में ही गरीबी की मार को झेलने का आदी हो जाता हैं। अगंतुक की मॉ द्वारा लेखक अमीर--गरीब बच्चों की तुलना करते हुए लिखते हैं--

"भूखे गरीब दलित बच्चों को गर्मी,सर्दी का कोई असर नहीं होता हैं। गरीबी उनको सर्दी--गर्मी प्रूफ बना देती है। गरीब बच्चों पर जब कोई बिमारी हमला करती है तो बीमारी भी पस्त हो जाती हैं। इसलिए गरीब बच्चों की आयु महलों में रहने वाले रईस जादों से ज्यादा लंबी होती है, जो ए.सी.और पंखो के नीचे रहते हैं। हलवा पूरी खाते हैं। एरोप्लेन और मोटरकार में चलते हैं। टाई सूट पहनते हैं। गरीब बच्चे किसी भी काम को करने में शरमाते नहीं हैं। ऐसे ही बच्चे देश का भविष्य होते हैं। यही बच्चे देश को मजबूत,वैभवशाली और गौरवशाली बनाते हैं।"[7] (पृ.16)

अर्थात् सोनकर जी अपने आंबेडकरवादी विचार चरित्रों के माध्यम से प्रस्तुत करते हैं। संक्षेप में कहानी कार दलितों को ऐशो आराम में पलने वाले लोगों से बेहत्तर और देश के भविष्य के भाग्य विधाता सिध्द करते हैं। यही नहीं तथाकथित व्यवस्था के प्रति रूपनारायण सोनकर के चरित्र, रोा,आक्रोश,प्रतिरोध एवं विद्रोह का रवैया अपनाते हुए दृष्टिगोचर होते हैं।

प्रा.डॉ.एम.डी.इंगोले
(शोधनिर्देशक तथा हिंदी विभागाध्यक्ष)
कला,वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय,गंगाखेड
जि.परभणी--431514 (महाराष्ट्र)
मो.09970721935, 09421552691
Email - ingolemunjaji@gmail.com

संदर्भ ग्रंथ

1. साहित्य सरिता-- सं.जोगेंद्रसिंह बिसेन (प .92)
2. जहरीली जडे-- रूपनारायण सोनकर (प .13)
3. वही, (प .14)
4. वही, (प .14)
5. वही, (प .15)
6. वही, (प .19)
7. वही, (प .16)